International Journal of Information Movement Vol.1 Issue XII (April 2017)
Website: www.ijim.in ISSN: 2456-0553 (online) Pages 88-95

सत्येन्द्र शर्मा का रिपोर्ताज साहित्य

डॉ. सुमन लता
हिन्दी प्रवक्ता,
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, कुरुक्षेत्र

1.0 परिचय

सत्येन्द्र जी के अब तक 8 रिपोर्ताज उपलब्ध हैं। ये सभी 'अपने हिस्से का दर्द' संकलन में संकलित हैं। इन रिपोर्ताजों को तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है। पहले वर्ग में व्यक्तित्व निरुपक रिपोर्ताज 'आखिरी शाम' आता है। इसमें वयोवृद्ध, तपःपूत, मनस्वी चित्रकार शोभा सिंह के व्यक्तित्व के भव्य और दिव्य गुणों को बड़ी रचनाधर्मी शैली में साकार किया गया है।

दूसरे वर्ग में स्थानीय समस्याओं के निरुपक रिपोर्ताज सम्मिलित हें। 'बहुत नचायो गोपाल' में वृन्दावन तीर्थ के चित्रात्मक विवरणों के साथ–साथ वहाँ के पण्डों की दादागिरी स उत्पन्न समस्याओं का बहुआयामी विवेचन किया गया है।

'उत्तरकाशी का भँवरजाल' में परिवार नियोजन, असामाजिक तत्त्वों के कारनामों, नारी उत्पीड़न, दुहरी पुलिस व्यवस्था आदि समस्याओं पर गहराई से विचार किया गया है। 'तीन बीघा हस्तांतरण' में राजनेताओं के मनमाने निर्णय के दौरान की गई जन भावना की घोर उपेक्षा का बड़ा ही सर्वांगीण एवं दर्दीला चित्रण किया गया है।

तीसरे वर्ग में वैचारिक रिपोतार्ज आते हैं। ये हैं 'कर्म और ज्योतिष', 'कयामत का दिन' तथा 'मनुष्य अफ्रीका में नहीं भारत में जन्मा'। ये तीनों वैचारिक सामग्री से सम्पन्न होने के कारण चिन्तन की प्रेरणा प्रदान करते हैं। लेखक की महती उपलब्धि यही है कि उसने सूचनात्मक और वैचारिक सामग्री को भी भाव संचार का विषय बनाकर सरस व रचनात्मक रूप प्रदान किया है।

'अपने हिस्से का दर्द' संकलन में 'सत्येन्द्र जी' ने रिपोर्ताजों का संकलन किया है उन सभी का हिन्दी रिपोर्ताज साहित्य में निहित तत्त्वों के आधार पर अध्ययन इस प्रकार है–

2.0 घटना :

रिपोर्ताज में घटना का विशेष महत्त्व होता है। यही कारण है कि घटना को रिपोर्ताज विधा का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण तत्त्व माना जाता है। 'अपने हिस्से का दर्द' के अंतर्गत संकलित सत्येन्द्र जी का प्रत्येक रिपोर्ताज उनके पत्रकारिता के कार्य के लिए भ्रमण के दौरान, कुछ व्यक्तियों के इन्टरव्यू तथा कुछ स्थलों पर उनकी यात्रा के दौरान घटी घटनाओं की अनुभूतियों पर आधारित है। सत्येन्द्र जी के रिपोर्ताजों में घटना तत्त्व समाहित है इसके लिए हम कुछ उदाहरण देख सकते हैं।

'आखिरी शाम' रिपोर्ताज में सत्येन्द्र जी ने वयोवृद्ध, तपःभूत, मनस्वी, चित्रकार, शोभासिंह के व्यक्तित्व के भव्य व दिव्य गुणों का वर्णन किया है। राजनीतिक स्वार्थता भीड़–भाड़ भरी दुनियाँ से दूर पर्वतीय स्थान पर उनका रहना, रोम, स्विटजरलैंड, कनाडा, इंग्लैंड जैसे देशों की सैर कर चुकने के बाद भी कभी अपनी कीर्ति के लिए किसी प्रदर्शनी का आयोजन न करना, स्कूल व कॉलेज की औपचारिक शिक्षा न लेने पर भी पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला से डी.लिट्. की उपाधि से सम्मानित किया जाना, 'भूतराज' जैसी फिल्मों में निर्देशन तथा अपने जीवन में केवल चार वर्ष ईरान में नक्शानवीस की नौकरी करना आदि घटनाएँ शोभा सिंह के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालने में सक्षम हैं। 'बहुत नचायो गोपाल' रिपोर्ताज में वृन्दावन तीर्थ के मन्दिरों के विवरणों के साथ–साथ वहाँ के पण्डों की दादागिरी से उत्पन्न समस्याओं का बहुआयामी विवेचन है। पंडों का रेलवे स्टेशनों पर गाईड के रूप में मुसाफिरों को मिलना, अपनी भलमनसाहत जाहिर करके उन्हें अपनी गिरफ्त में लेना। पण्डों द्वारा

मन्दिरों का सारा माल हड़प करना, मंदिर में लाश का मिलना तथा मथुरा के निकट तीर्थ यात्रियों को लूटने की वारदातें आदि को देखकर लेखक को महसूस हुआ कि जिस पवित्र स्थली पर कृष्ण जी ने अपने बाल सखाओं के साथ क्रीड़ाएँ की, आज किस प्रकार पण्डों ने श्री कृष्ण की लीलाओं की याद दिलाने वाले इन मन्दिरों को अपनी जंजीरों में कैद कर लिया है। यही एक रिपोर्ताज का वर्ण्य विषय बनाकर हमारे सामने प्रस्तुत किया है।

'उत्तरकाशी का भँवर जाल' में परिवार नियोजन के लिए ऐसी महिलाओं का ऑपरेशन करना जो ऑपरेशन करने के लायक नहीं है। असामाजिक तत्त्वों द्वारा हरिजन महिला को उत्पीड़ित करना, पुलिस द्वारा भी हरिजन महिला को इन्साफ न मिलना, दोहरी पुलिस व्यवस्था के कारण अनेक प्रशासनिक समस्याओं का उठना आदि घटनाओं को सत्येन्द्र जी ने इस रिपोर्ताज में संकलित किया है।

'नहर से भी थार की प्यास नहीं मिटी' नाम रिपोर्ताज राजस्थान में 'इन्दिरा नहर परियोजना' पर आधारित है। इस रिपोर्ताज में दर्शाया गया है कि यह नहर बनने के बाद भी राजस्थान में सिंचाई की समस्या ज्यों–की–त्यों है। नहर परियोजना शुरू होने पर राजस्थान के लोगों ने राजस्थान की भूमि को हरा–भरा देखने का जो सपना देखा था, वह अब निराशा में बदल गया है। किन्तु प्रादेशिक सेना के जवानों ने अपनी मेहनत से नहर को पानी के साथ मिलाकर इस दिशा में जो प्रयास किया, मीलों लम्बी हरियाली की जो पट्टी बिछा दी है, उससे इतना जरूर लगा है कि राजस्थान में एक आशा की किरण ने चमकना शुरू कर दिया है।

'तीन बीघा हस्तांतरण' में मनमाने निर्णय के दौरान पं. बंगाल के तीन बीघा भूखंड को आगामी 26 जून को बंगला देश के हवाले करने की प्रस्तावित योजना के कारण वहाँ के नवयुवकों द्वारा रक्त से हस्ताक्षर करके एक शपथ पत्र सरकार के पास भेजा, जिसमें उन्होंने लिखा था कि हम जान दे देंगे किन्तु तीन बीघा बंगला देश को हस्तांतरित नहीं होने देंगे। इस हस्तांतरण के विरोध में कूचबिहार तथा जलपाई गुड़ी में जगह–जगह बन्द का आयोजन, हिंसा भड़क जाने पर पुलिस द्वारा दो व्यक्तियों की मृत्यु आदि घटनाओं का बड़ा दर्दीला चित्रण किया गया है।

इसके अतिरिक्त 'कर्म व ज्योतिष', 'कयामत का दिन' तथा 'मनुष्य अफ्रीका में नहीं भारत में जन्मा' ये तीनों रिपोर्ताज वैचारिक सामग्री से सम्पन्न होने के कारण चिन्तन की प्रेरणा प्रदान करते हैं।

उपर्युक्त उदाहरणों के आधार पर कहा जा सकता है कि 'अपने हिस्से का दर्द' संकलन के सभी रिपार्ताज किसी न किसी घटना, समस्या पर आधारित हैं। अतः इनमें स्मृति पर आधारित घटना तत्त्व का पूर्ण रूप में निर्वाह हुआ है।

3.0 परिवेशांकन :

रिपोर्ताज में घटना को जीवन्त रूप देने के लिए घटनास्थल के आसपास के वातावरण का वर्णन करना जरूरी है। इसके लिए रिपोर्ताजकार कभी प्राकृतिक दृश्यों की सहायता लेते हैं, तो कभी घटनास्थल के निकट क्या–क्या घटित हो रहा है अथवा वहाँ के उपस्थित लोगों का व्यवहार कैसा है इत्यादि का वर्णन करता है। इन सभी के माध्यम से रिपोर्ताजकार परिवेशांकन करता है, जिसे कहानी में देशकाल वातावरण भी कहा जाता है। 'अपने हिस्से का दर्द' में संकलित रिपोर्ताजों में 'परिवेशांकन' तत्त्व के कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं–

सोहनी–महिवाल, वृन्दावन के कान्हा, भक्त रविदास जी, गुरुनानक देव जी, गुरु गोबिन्द सिंह जी, लाल बहादुर, पंडित नेहरू....। इन सभी से मिल सकेंगे आप हिमाचल के एक छोटे से कस्बे अंधरेटा में जो कांगड़ा जिले में पालमपुर से सिर्फ 11 किलोमीटर दूर पालमपुर–जयसिंहापुरा मार्ग पर पड़ता है। विश्वविख्यात अंग्रेजी लेखिका स्व. नोरा रिचर्डस ने हिन्दुस्तानी चित्रकार सरदार शोभा सिंह को अपने इस कस्बे में सिर छुपाने की जगह अपने निधन से पूर्व 1954 में दी थी। दिल्ली से अंधरेटा गए इस चित्रकार ने अपने रंगों की पूरी दुनिया ही एक छोटे से कमरे में आबाद कर ली है।''[1]

''उसके बाद हमारा गाईड हमें निधिवन में ले गया। जहाँ अब भी हर रात श्री कृष्णराधा जी के साथ रास रचाते हैं तथा श्री कृष्ण की बाँसुरी की आवाज और राधा जी के पाँव घुँघरूओं की छन–छन

पूरे आकाश में गूँज उठती है। निधिवन सचमुच में कोई वन न लगकर पिकनिक सपॉट जैसा ज्यादा लगता है, जहाँ बन्दर तीर्थ यात्रियों की हथेली से चने उठाकर खाते हैं और पूरी वाटिका में सिर्फ एक किस्म के झाड़ीनुमा पेड़ लगे हैं, जो राधा कृष्ण की प्रेम क्रीड़ा के कारण सिर झुकाए रहते हैं।''[2]

'तीन बीघा हस्तांतरण' में सत्येन्द्रजी ने तीन बीघा भूखंड की 26 जून को बंगला देश को हस्तांतरित करने की योजना के कारण कुचलीबाड़ी व मेखलीगंज के लोगों द्वारा इस प्रस्ताव के विरोध में किए गए आन्दोलन के वातावरण को मूर्त कर दिया, ''सीमावर्ती कूचविहार व जलपाई गुड़ी के कई स्थानों में बहुत बड़े पैमाने पर हिंसा भड़कने तथा पुलिस द्वारा अश्रु गैस के गोले छोड़ने, लाठीचार्ज तथा दो स्थानों पर आंदोलनकारियों पर गोली चलाए जाने के साथ आज तीन बीघा गलियारा औपचारिक रूप से 111 वर्ष के लिए बंगला देश को सौंप दिया गया।''[3]

'कयामत का दिन' रिपोर्ताज में भारत के प्रमुख परामानव वैज्ञानिक सांख्यान मन को भयक्रांत करने वाली उक्त तसवीर पेश करते हुए बताते हैं कि स्वयं मानव द्वारा निर्मित वातावरण औद्योगिक व वाहनों की गैसों, बायो गैसों और कचरे, आण्विक व रासायनिक ईंधनों के कचरों से प्रदूषित हो चुका है। इस प्रदूषण ने वायुमण्डल को ढाँप लिया है। पृथ्वी को सुरक्षा प्रदान करने वाली ओजोन की परत को भेद कर रेडियोधर्मिता के खतरे में इजाफा कर दिया है।[4]

अतः कहा जा सकता है कि 'परिवेशांकन' का सजीव चित्रण इन रिपोर्ताजों को सफलता प्रदान करता है।

4.0 प्रत्यक्षदर्शी यथार्थ :

रिपोर्ताज के लिए अनिवार्य है कि उसकी घटना प्रत्यक्षदर्शी हो तभी रिपोर्ताजकार घटना तथा पाठक के मध्य की दूरी को अपने माध्यम से समाप्त कर सकता है। किन्तु 'अपने हिस्से का दर्द' संकलन में संकलित रिपोर्ताज में इस गुण का अभाव है, इसका कारण यह है कि सत्येन्द्र जी का कार्य क्षेत्र पत्रकारिता का है। उनके अधिकतर रिपोर्ताज इन्टरव्यू पर आधारित है। इन्टरव्यू के दौरान महत्त्वपूर्ण जानकारी को आधार बनाकर ही उन्होंने ये रिपोर्ताज लिखे हैं। उन्होंने स्वयं लिखा है– ''पत्रकार के रूप में मेरा कर्मक्षेत्र दिल्ली, मेरठ, कलकत्ता व रोहतक रहा है। मुझ हिमाचल व राजस्थान में घूमने का भी मौका मिला है। हिमाचल भ्रमण के दौरान चित्रकार शोभा सिंह, कलकत्ता प्रवास के दौरान परामानव वैज्ञानिक ए.आर. सांख्यान तथा तेरापंथ श्वेताम्बर जैन मुनि सुमेरमल जी के साथ अंतरंग बातचीत में मुझे कुछ महत्त्वपूर्ण व उपयोगी जानकारियाँ मिली। बंगला देश को तीन बीघा गलियारा के हस्तांतरण के अतिरिक्त श्रीमती इन्दिरा गांधी की हत्या के बाद नवम्बर 1984 में दिल्ली में भड़के साम्प्रदायिक दंगे तथा 1987 में करीब छह माह तक जारी रहे मेरठ के साम्प्रदायिक उपद्रवों के समाचार संकलन का भी मुझे मौका मिला ह। गढ़वाल व ब्रजमण्डल भ्रमण के दौरान एक युवा संन्यासी तथा पण्डों द्वारा बताए गए उनके अनुभवों को भी अपनी पत्रकारिता वाली कसौटी पर रखकर परखा है। ये लेख मेरे इस संकलन में शामिल है।''[5]

किन्तु फिर भी उनके रिपोर्ताज 'बहुत नचायो गोपाल', 'तीन बीघा हस्तांतरण' तथा 'नहर से भी थार की प्यास नहीं बुझी' में प्रत्येक घटना सत्येन्द्र जी की आँखों देखी है क्योंकि उनके पत्रकारिता के कार्य के दौरान उनको इन स्थलों पर जाकर रिपोर्टिंग करने का मौका मिला।

5.0 चित्रात्मकता :

इन रिपोर्ताजों में सत्येन्द्र जी ने घटनाओं को शब्दों में इस प्रकार पिरोया है कि पाठक स्वयं यह अनुभव करता है कि मानो सारी घटनाएँ उसके सामने घटित हो रही हों।

'आखिरी शाम' में सत्येन्द्र जी ने चित्रकार शोभा सिंह द्वारा चित्रित ईसा मसीह का जो चित्र खींचा है वह इस प्रकार है– ''आधी झुकी सलीब और उसके पीछे नूरानी प्रकाश की एक नूरानी ज्योति, कुंडलदार केश, तेज रोशनी, टिमटिमाती सी आँखें। सुर्ख लाल रंगत लिए चेहरा जैसे खून में सफेद

मक्खन की स्निग्धता–सी घुल गई हो या फिर बर्फ ढकी चोटी पर बिन बादल की धूप पूरी की पूरी एक बारगी में ही खिल उठी हो। देव आत्मा का दैवी प्रकाश जिसके गिर्द रोशनी का कृत्रिम दायरा खींचने की कोई जरूरत नहीं। भ्रम होने लगता है कि कहीं ईसा मसीह हिन्दुस्तान की धौलाधार पर्वत मालाओं पर ही तो नहीं उतर आए। सिर खुद–ब–खुद श्रद्धा से नत होने लगता है।''[6]

'नहर से भी थार की प्यास नहीं बुझी' के अंतर्गत नहर के आसपास का चित्रांकन इस प्रकार किया है, ''दूसरी तरफ गाय, भेड़–बकरियों के चराने वाले स्थानीय लोगों के उतरे हुए चेहरे जरूर कहीं–कहीं मिल जाते हैं। नहर पर मीलों तक बड़े पुल नहीं जिस कारण उनकी चारागाहें भी सिमट कर रह गई हैं। अन्यथा वे यहाँ–से–वहा तक जिधर भी मुँह आता था पशुओं को लेकर निकल जाते थे। अब नहर एक बहुत बड़ी दीवार बन कर आ खड़ी हुई है। कहीं–कहीं उनके नंग–धड़ंग बच्चे भी इधर–उधर दौड़ते दिखाई दे जाते हैं। बीकानेर से आने वाली मुख्य सड़क पर काफिलों के रूप में चलते भेड़–बकरियों और ऊँटों के समूह चरवाहों की ललकार व लाठी की फटकार से डर कर तेज कदम फुदकते या दौड़ते दिखाई देते हैं।''[7]

'तीन बीघा हस्तांतरण' में चित्रात्मकता का उदाहरण देखिए, ''धपराहट गाँव के छप्पर के नीचे बनी एक चाय की दुकान पर चाय पीने के बहाने हमने वहाँ बैठे शिविन राय से बात की तो देखते–ही–देखते वहाँ एक के बाद एक–एक करके कई युवक इकट्ठे हो गए। सभी ने अपनी वे उंगलियाँ इस संवाददाता की तरफ बढ़ा दी जिससे खून निकाल कर एक दिन पहले ही सरकार को ज्ञापन लिखकर भेज आए थे कि हम अपनी जान दे देंगे, पर तीन बीघा नहीं देंग। केन्द्रीय सरकार की टुकड़ियाँ धपराहाट में पिछले काफी समय से पहुँचने लगी थीं।''[8] 'कयामत का दिन' में आदि मानव का चित्र देखिए, ''प्रकृति की गोद में पले पाषाण युगीन शिकारी बहुत हट्टे–कट्टे, दैत्याकार, वानर जीव थे जो मानव के उभरने से पहले एक करोड़ से बीस लाख वर्ष पूर्व यूरेशिया में विचरण किया करते थे।''[9]

इसके अतिरिक्त 'बहुत नचायो गोपाल' में वृन्दावन के मंदिरों तथा वहाँ घटने वाली घटनाओं का सजीव चित्र प्रस्तुत किया है।

इस प्रकार के अनेक उदाहरण 'अपने हिस्से का दर्द' में दिखाई पड़ते हैं तथा सत्येन्द्र जी के रिपोर्ताज में चित्रात्मकता एवं सजीवता विद्यमान है।

6.0 तटस्थता :

किसी घटना को नितान्त सत्य एवं निष्पक्ष रूप में चित्रित करने की कला 'तटस्थता' कहलाती है। इसका प्रयोग रिपोर्ताज में अनिवार्य रूप से किया जाता है। सत्येन्द्र जी ने अत्यन्त तटस्थ रहकर ही अपने रिपोर्ताजों की रचना की है। इनमें एक भी रिपोर्ताज ऐसा नहीं मिलता, जिसमें तटस्थता तत्त्व का अभाव पाया जाए।

सत्येन्द्र जी के रिपोर्ताज अंतरंग बातचीत पर आधारित है। इसलिए उन्होंने उन व्यक्तियों द्वारा बताई गई बातों, जानकारियों, घटनाओं को निष्पक्ष रूप से प्रस्तुत किया है।

'आखिरी शाम' में खालिस्तान आंदोलन व आतंकवाद के बारे में पूछे जाने पर शोभा सिंह ने इसे महज एक मूर्खता बताते हुए कहा कि सिख राज करने के लिए नहीं हैं। यदि कोई सिख ऐसा करेगा भी तो अपनी निजी हैसियत से। महाराजा रणजीत सिंह ने शासन किया तो अपनी निजी हैसियत से। सिख होने के नाते किया होता तो सिखों का शासन उनके साथ ही खत्म नहीं हुआ होता। उसके बाद भी बना रहता।''[10]

'बहुत नचायो गोपाल' में तटस्थता का परिचय हमें इन पंक्तियों में देखने को मिलता है, ''श्रद्धालुजन का मन इन मन्दिरों की खस्ता व जर्जर हालत से आहत अवश्य होता है, परन्तु पंडों की धोखाधड़ी से अनभिज्ञ रहता है। ये सभी प्राचीन मंदिर पुश्तैनी जायदाद मात्र बनकर रह गए हैं।

पीढ़ी–दर–पीढ़ी इन मंदिरों के चढ़ावे में से सिर्फ नाम व पतों के पत्थर लगाने के मामूली खर्च को छोड़कर बाकी सारी रकम खुद हड़प जाते हैं और पीढ़ी–दर–पीढ़ी ऐश करते चले आ रहे हैं।''[11]

'नहर से भी थार की प्यास नहीं मिटी' में सत्येन्द्र जी ने नहर के लाभ के बारे में राजस्थान के लोगों के विचारों को तटस्थ रूप से प्रस्तुत किया है। एक अधेड़ उम्र के व्यक्ति से जब उन्होंने सवाल किया कि नहर से यहाँ के लोगों को कितना लाभ पहुँचा? वह बड़े उदासीन भाव से बोला, सरकार तो करती है पर हमें लाभ नहीं मिला। दूसरा व्यक्ति बोला– ''साहब सरकार आसमान से कोई नहर खोदे तभी राजस्थान हरा–भरा होगा। इस नहर से तो टीलों तक पानी पहुंचेगा नहीं।''[12]

'कयामत का दिन' में धूमकेतु के बारे में वर्णन करते हुए कहते हैं, ''जापान में धूमकेतु पर नजर रखने वाले एक पेशेवर खगोलविद ने 'उरसा मेजर' एक पिंड देखा जिसे विशेषज्ञों ने बहुत जल्दी एक ऐसा धूमकेतु घोषित कर दिया जिसे 1962 में देखा गया था तथा 1971 में उसके पुनः प्रकट होने की भविष्यवाणियाँ की गई थीं। इस धूमकेतु के बारे में दोबारा गणित बैठाया गया तो पता चला कि यह 2123 में पृथ्वी से टकराएगा। घोषणा के तीन माह बाद ही विश्व ने इस धूमकेतु के टुकड़े होकर बिखरते देखकर राहत की सांस ली, परन्तु इस तरह के वैज्ञानिकों को अब किसी दूसरे अपशकुनी धूमकेतु का इंतजार करना होगा।''[13]

'तीन बीघा हस्तांतरण' में सत्येन्द्र जी ने रैली में एक छात्र के विचारों को बड़ी तटस्थता से प्रस्तुत किया है, ''नेता जी सुभाष चंद्र बोस ने कहा था कि तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा। पर पश्चिमी बंगाल के मुख्यमंत्री ज्योति बसु कहते हैं कि तुम मुझे तीन बीघा दो मैं तुम्हें अस्पताल दूँगा। इस छात्र नेता का संकेत श्री ज्योति बसु द्वारा तीन बीघा के हस्तांतरण पर आन्दोलन न करने को कहे जाने व धपराहाट कस्बे में हस्पताल बनवाने की घोषणा की ओर था।''[14]

उपर्युक्त उदाहरणों से ज्ञात है कि रिपोर्ताज में लेखक का दृष्टिकोण तटस्थ रहा है। 'अपने हिस्से का दर्द' संकलन में संकलित सभी रिपोर्ताजों में यह तत्त्व विशेष रूप से पाया जाता है।

7.0 ग्रहणशीलता :

रिपोर्ताज विधा का एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व है ग्रहणशीलता। जिसके माध्यम से रिपोर्ताजकार घटना में निहित वस्तुतत्त्व को आत्मसात् करके और अपनी संवेदना के माध्यम से पाठक तक पहुँचाता है। सत्येन्द्र जी इस लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल रहे हैं। सत्येन्द्र जी की ग्रहणशीलता उनके सूक्ष्म निरीक्षण के कारण उत्कर्ष पर रही है। जितना अधिक सत्येन्द्र जी न अपने आँखों से देखकर अपनी जानकारी से ग्रहण किया उतना अधिक वर्णन रिपोर्ताजों के माध्यम से अपने प्रिय पाठकों तक पहुँचाया। निम्न उदाहरणों में देखिए–

'आखिरी शाम' रिपोर्ताज में लोभ, यश, स्वार्थ से कोसों दूर रहने वाले विरक्त चित्रकार शोभा सिंह के व्यक्तित्व के बारे में बताते हुए कहते हैं, ''लगभग 90 वर्षीय इस चित्रकार ने कभी किसी प्रदर्शनी का आयोजन नहीं किया हालांकि वे रोम, स्विट्जरलैंड, कनाडा, इंग्लैण्ड की सैर कर चुके हैं। कोई औपचारिक शिक्षा ग्रहण न करने पर भी पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला ने उन्हें डी.लिट. की मानक उपाधि से सम्मानित किया है। राष्ट्रपति ने पदम्श्री (1964) की उपाधि से विभूषित किया है। बी. बी.सी. ने एक वृतचित्र बनाया है, पर संत चित्रकार इन सबसे विरक्त है जैसे यह सब उनके लिए कुछ भी नहीं। उनके लिए कला सिर्फ कला है।''[15] सत्येन्द्र जी की ग्रहण शक्ति का एक अन्य उदाहरण देखिए, ''भगवान श्रीकृष्ण की क्रीड़ा स्थली में प्राचीन मंदिरों के दर्शन करते–करते हमारे दिमाग में एक सवाल उठा कि यदि भगवान स्वयं एक बार फिर से अवतार लेकर वृन्दावन आए और पंडित लोग उनके नए मानव रूप को पहचान नहीं पाए तो क्या उन्हें भी पंडितों की इस फांसने की कला का सामना करना पड़ेगा? क्या भगवान को कुंज की गलियाँ उस जमाने जैसी लगेंगी?''[16] इसमें सत्येन्द्र जी ने

वृन्दावन तीर्थ के बदलते स्वरूप तथा पंडों द्वारा यात्रियों को फांसकर धन बटोरने जैसी घटना को उजागर किया है।

इस प्रकार 'अपने हिस्से का दर्द' संकलन के सभी रिपोर्ताज में ग्रहणशीलता का तत्त्व अनिवार्य रूप में पाया जाता है। अतः कहा जा सकता है कि ग्रहणशीलता तत्त्व की कसौटी पर ये समस्त रिपोर्ताज खरे उतरते हैं।

8.0 तात्कालिता :

रिपोर्ताज को तत्काल लिखने की अनिवार्यता में इस विधा का महत्त्वपूर्ण तत्त्व तत्कालिता विद्यमान है, क्योंकि यही वह तत्त्व है जो रिपोर्ताज विधा को अन्य गद्य विधाओं से पृथक् अस्तित्व प्रदान करता है। तत्कालीन लेखन का यही परिणाम होता है। रिपोर्ताजकार के नेत्रों के समक्ष सम्पूर्ण घटना का एक दृश्य चित्र के समान प्रस्तुत होता है। यह रिपोर्ताज विधा का अभिन्न अंग है। 'अपने हिस्से का दर्द' संकलन के रिपोर्ताजों 'तीन बीघा हस्तांतरण', 'नहर से भी थार की प्यास नहीं मिटी' तथा 'बहुत नचायो गोपाल' से संबंधित सभी स्थलों की सत्येन्द्र जी ने स्वयं यात्रा की है। वहाँ घटने वाली घटनाओं और समस्याओं को स्वयं देखा तथा अनुभव किया है। ये तीनों रिपोर्ताज तत्कालीन लेखन का ही परिणाम है। तात्कालिता के कुछ उदाहरण यहाँ द्रष्टव्य हैं।

"26 जून, 1991 । तीन बीघा हस्तांतरण के विरोध में आज दोनों सीमांत जिलों में सभी बाजार, सरकारी, गैर–सरकारी संस्थान बंद रहे तथा सड़क यातायात ठप्प रहा। आंदोलनकारियों व पुलिस में जगह–जगह संघर्ष हुआ। वहाँ दूसरी तरफ सुरक्षा बलों द्वारा पूरी तरह से सील किए गए तीन बीघा क्षेत्र में ईंटों से बनाया गया गलियारा सांकेतिक रूप से एक–एक घंटे के लिए दोनों देशों के लिए खोल दिया गया। इसके बाद भारतीय क्षेत्र में कूच बिहार जिले के जिलाधिकारी तथा बंगलादेश के लालमुनिहाट जिले के उपायुक्त ने सुबह 10:20 बजे तीन बीघा गलियारे में जिले तथा बंगला देश को गलियारा हस्तांतरित किए जाने की औपचारिकता पूरी की। दोनों देशों के चुनिंदा लोगों द्वारा गलियारे पर बारी–बारी से यात्रा करने की खानापूर्ति भी की गई। इसके बाद गलियारे को दोनों देशों की आम जनता के लिए बंद कर दिया गया।"[17]

'बहुत नचायो गोपाल' रिपोर्ताज में जीवन्तता का प्रवेश ही तत्काल लेखन के कारण हुआ है। सत्येन्द्र जी ने वृन्दावन तीर्थ के एक–एक मन्दिर, पण्डों की चालबाजी तथा वहां घटने वाली प्रत्येक घटना को इतने रोचक रूप में प्रस्तुत किया है कि इन्हें पढ़कर यह नहीं कहा जा सकता कि यह रिपोर्ताज मात्र स्मृति के आधार पर लिखा है। उदाहरण के लिए, "भगवान श्रीकृष्ण की क्रीड़ा स्थली में प्राचीन मंदिरों के दर्शन करते–करते हमारे दिमाग में एक सवाल उठा कि यदि भगवान स्वयं एक बार फिर से अवतार लेकर वृन्दावन आए और पंडित लोग उनके मानव रूप को पहचान नहीं पाए तो क्या उन्हें पंडितों की इस फांसने–पटाने की कला का सामना करना पड़ेगा? क्या भगवान को कुंज की गलियाँ उस जमाने जैसी ही लगेंगी? इन्हीं सवालों के साथ हम कुंज गली से बाहर निकल आए।"[18]

अतः कहा जा सकता है कि 'तात्कालिता' तत्त्व के अभाव में किसी रचना को रिपोर्ताज की संज्ञा नहीं दी जा सकती, सत्येन्द्र जी ने इस तत्त्व को आवश्यक रूप से स्वीकार करते हुए इसे अपने रिपोर्ताज में समाविष्ट किया है। अतः 'अपने हिस्से का दर्द' संकलन में यह तत्त्व दृष्टिगत होता है।

9.0 रोचकता :

रोचकता किसी भी रिपोर्ताज का अनिवार्य तत्त्व माना जाता है। रिपोर्ताजकार अनेक सरस घटनाओं, व्यक्तिगत प्रसंगों और मनोरंजक बातों से पाठक को अपनी ओर आकर्षित नहीं कर पायेगा तो रिपोर्ताजकार का अभिप्रेत भी पाठक तक सम्प्रेषित नहीं हो पायेगा। सत्येन्द्र जी ने अनेक रोचक प्रसंगों का प्रयोग किया है यथा– "इस विरक्त बाने पर भी अलख जगाने आया जोगी भिक्षा देने आई महिला से ध्यान हटाकर दरवाजे की ओट से घूँघट में सिमटी एक सजी संवरी दुल्हन को प्यासी तिरछी नजरों से निहार जाता है। नवेली दुल्हन दरवाजे की ओट में खड़ी हाथ से खींचे दुपट्टे के लम्बे घूँघट में से

लुटे–पिटे उस जोगी को देखकर व्यथित हो उठती है। दो जिस्मों में छिपी दो तड़पती आत्माएँ जैसे कराह उठी हों। तीखे व शोख होने पर भी रंगों में घुली ढलती शाम की उदासी सीधे तन–मन में उतर जाती है और पुलकित हुआ रोम–रोम–सा इस बात की गवाही देने लगता है कि पंजाब की प्रेम कथाओं में हर दिल अजीज हीर–रांझा से आज सचमुच ही मुलाकात हो गई।''[19]

'नहर से भी थार की प्यास नहीं मिटी' रिपोर्ताज में रोचकता का एक अन्य उदाहरण देखिए, ''राजस्थान अब भी उतने का उतना ही प्यासा है और हर रोज सुबह से लेकर शाम तक आसमान में काले बादलों की खोज में भटकता हुआ एक लम्बे उच्छ्वास के साथ आँखें मूँद कर मृग–मरीचिका भरे डरावने सपनों की नींद में कहीं खो जाता है।''[20]

अतः कहा जा सकता है कि सत्येन्द्र जी ने अपने रिपोर्ताजों को रोचक बनाने हेतु भरसक प्रयत्न किया है। यही कारण है कि उन्हें पढ़ते हुए पाठक को कहीं ऊब या उकताहट का आभास नहीं होता। अतः 'अपने हिस्से का दर्द' में संकलित प्रत्येक रिपोर्ताज में रोचकता तत्त्व का निर्वाह हुआ है।

10.0 सम्प्रेषणीयता :

रिपोर्ताज विधा का अंतिम महत्त्वपूर्ण तत्त्व है सम्प्रेषणीयता। अपने मन्तव्य को पाठक तक सम्प्रेषित करने के लिए रिपोर्ताजकार विविध शैलियों का प्रयोग करता है। विभिन्न घटनाओं के समावेश और विशिष्ट कथन भंगिमा से भी लेखक उसे अधिक रोचक और सम्प्रेषणीय बनाता है।

सत्येन्द्र जी अपने रिपोर्ताजों मं किसी बड़े व्यक्ति के इन्टरव्यू अथवा सामान्य लोगों से मिली जानकारी द्वारा पाठकों में संवेदना को उत्पन्न करने में सक्षम है।

यहाँ सत्येन्द्र जी ने चित्रकार शोभा सिंह की कला के प्रति समर्पण भावना को प्रश्नोत्तर शैली में प्रस्तुत किया है।

प्रश्नोत्तर शैली का एक और उदाहरण देखिए–

''ऐसे ही एक काफिले के साथ चलने वाले चरवाहे से संवाददाता ने पूछ लिया– ''भैया कहाँ जा रहे हो?''

'अपने देश जैसलमेर बाबू जी।'

'यहाँ किस लिए आए थे और अब लौट क्यों रहे हो?'

''क्या करें बाबूजी, हमारे देश में सूखा था। यहाँ नहर है। सोचा अच्छा चारा मिलेगा, पर यहाँ नहर–तो–नहर, भगवान भी नहीं बरसा। सूखे में ही रहना है तो अपना देश ही भला।''[21]

इस उदाहरण से पाठक साफ समझ जाता है कि राजस्थान में नहर बनने पर भी सूखे की समस्या ज्यों–की–त्यों है।

सत्येन्द्र जी के 'आखिरी शाम' का यह उदाहरण देखिए जिसमें कलात्मकता का पुट है–

''आधी झुकी सलीब और उसके पीछे नूरानी प्रकाश–सी आँखें। सुर्ख लाल रंगत लिए चेहरा जैसे खून में सफेद मक्खन की स्निग्धता–सी घुल गई हो या फिर बर्फ ढकी चोटी पर बिन बादल की धूप पूरी–की–पूरी एक बारगी में ही खिल उठी हो।''[22] सत्येन्द्र जी के अनेक वाक्य और प्रसंग तीखे व्यंग्य हैं। जैसे–एक ग्रामीण दोपहर के वक्त अपनी झोंपड़ी में सोया हुआ था। एक अन्य ग्रामीण दौड़ता हुआ आया और उसे जगाते हुए बोला, 'उठ–उठ नहर बन गई है और उसमें पानी आया है।'

सोए हुए व्यक्ति ने झुंझलाहट से जवाब दिया, ''तो क्या?'', ''उठ काम कर, तेरे खेत में पानी आएगा। अच्छी फसल होगी, अरे तू मालामाल होगा और तू सुख चैन की नींद सो सकेगा।''

"वही तो कर रहा हूँ।" सोने वाले व्यक्ति ने जैसे नहर की निरर्थकता पर एक तीखा व्यंग्य कर दिया।"[23]

अतः सत्येन्द्र जी ने जिस प्रकार क उद्देश्यपूर्ण साहित्य का सृजन किया उसी प्रकार की भाषा का भी प्रयोग किया है। उनकी भाषा में दुरुहता का बोझ दिखाई नहीं देता। उनके सभी रिपोर्ताजों की भाषा साधारण बोलचाल की, सरल व स्पष्ट है।

'बहुत नचायो गोपाल', 'नहर से भी थार की प्यास नहीं बुझी' में वर्णनात्मक 'आखिरी शाम', 'कयामत का दिन', 'कर्म और ज्योतिष', 'मनुष्य अफ्रीका में नहीं भारत में जन्मा' में संवादात्मक तथा 'तीन बीघा हस्तांतरण' में समाचार शैली अपनाई गई है। अतः कहा जा सकता है कि सत्येन्द्र जी की भाषा शैली प्रभावित करने वाली है। रिपोर्ताज विधा का यह तत्त्व 'अपने हिस्से का दर्द' संकलन के रिपोर्ताजों में सहज ही प्राप्त होता है।

11.0 निष्कर्ष :

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि 'अपने हिस्से का दर्द' संकलन के आठों रिपोर्ताज इस विधा के सभी नौ तत्त्वों स्मृति पर आधारित घटनाएँ, परिवेशांकन, प्रत्यक्षदर्शी यथार्थ, तात्कालिता, रोचकता, ग्रहणशीलता, चित्रात्मकता, तटस्थता तथा सम्प्रेषणीयता पर खरे उतरते हैं। सत्येन्द्र जी ने यथातथ्यता, जीवन्तता, कलात्मकता को विशेष रूप से अपनाया है। उनके विवरणों में इतनी सजीवता है कि पाठक को कहीं भो ऊब का अनुभव नहीं होता। इनमें समाचार एवं विचार, दृश्य एवं चिन्तन के साथ ज्ञान एवं आनन्द का भी भण्डार है। इसके अतिरिक्त सत्येन्द्र जी ने इन रिपोर्ताज में उपयुक्त शब्द चयन व भाषा शैली का भी परिचय दिया है।

12.0 संदर्भ

1. सत्येन्द्र शर्मा, अपने हिस्से का दर्द, पृ. 165
2. वही, पृ. 172
3. वही, पृ. 206
4. वही, पृ. 194
5. वही, पृ. 12
6. वही, पृ. 165
7. वही, पृ. 181
8. सत्येन्द्र शर्मा, अपने हिस्से का दर्द, पृ. 205
9. वही, पृ. 194
10. वही, पृ. 166
11. वही, पृ. 171
12. वही, पृ. 183
13. वही, पृ. 193
14. वही, पृ. 203
15. सत्येन्द्र शर्मा, सफर खत्म नहीं होते, पृ. 166
16. वही, पृ. 172
17. सत्येन्द्र शर्मा, अपने हिस्से का दर्द, पृ. 206
18. वही, पृ. 71
19. वही, पृ. 165
20. वही, पृ. 181
21. वही, पृ. 165
22. वही, पृ. 182
23. वही, पृ. 182